बछ बारस व्रत कथा PDF

प्राचीन समय की कहानी है कि एक राजा ने अपने राज्य में पानी के लिए एक तालाब बनवाया। तालाब के चारों ओर दीवार पक्की बनाई गई ताकि पानी बाहर जाकर जमा न हो सके। लेकिन वह तालाब पानी से नहीं भरा था। तब राजा ने एक महान ज्योतिषी को बुलाया और इसका कारण पूछा। राजा की बात सुनकर ज्योतिषी ने कहा, हे राजन, यदि आप अपने पोते को यज्ञ में बलि चढ़ाएंगे तो यह तालाब पानी से भर जाएगा।

इसके बाद राजा ने यज्ञ किया और उसमें अपने पोते की बलि दे दी। और जब बारिश हुई तो तालाब पूरी तरह पानी से भर गया। राजा ने तालाब को जल से भरवाकर उसकी पूजा करवाई। पीछे से राजा की दासी ने गाय के बछड़े का साग बनाया। जब राजा पूजा करके लौटे तो उन्होंने दासी से पूछा कि गाय का बछड़ा कहां है। दासी बोली, “महाराज, मैंने उस बछड़े की सब्जी बनाई है।”

दासी की बात सुनकर राजा ने पूछा, हे पापिनी, तूने यह क्या किया है? और उस मांस और हड्डी को जमीन में गाड़ दिया. जब गाय वापस आई तो उसने अपने बछड़े को खोजा और अपने सींगों से उसी स्थान पर खुदाई करने लगी। जहां बछड़े के मांस का मटका गाड़ा गया था। खुदाई करते समय गाय का सींग मटके से टकराया तो गाय ने मटके को बाहर निकाल लिया। उसने देखा तो उस घड़े में गाय का बछड़ा और राजा का पोता दोनों जीवित पाये गये। उस दिन से इसे ओक/बाली/वत्स द्वादशी के रूप में मनाया जाने लगा।

pdfinbox.com